रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद का डिजिटल प्रकाशन

ॐ

पावन गुरु वंशावली

(शजरा शरीफ़)

सूफी-सन्त परम्परा ख़ानदान नक़्शबन्दिया

रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद का डिजिटल प्रकाशन

ॐ

पावन गुरु वंशावली

(शजरा शरीफ़)

सूफी-सन्त परम्परा ख़ानदान नक़्शबन्दिया

रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

ॐ सहनाववतु! सहनौ भुनक्तु! सहवीर्ययं करवा रहै!

तेजस्विनां वधीतमस्तु! मा विद्विषा वहै!

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः!!

हे पूर्णब्रह्म परमात्मन ! आप हम दोनों (गुरु-शिष्य) की साथ-साथ रक्षा करें, हम दोनों का साथ-साथ पालन करें, हम दोनों साथ ही साथ शक्ति प्राप्त करें ! हम दोनों की पढ़ी हुई विद्या तेजोमयी होवे ! हम दोनों में परस्पर द्वेष न हो, दोनों की दुई मिट जावे, स्नेह-सूत्र में बंध कर एक हो जावें एवं परम लय अवस्था को प्राप्त हों !

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

प्रार्थना

हे सच्चिदानन्दघन ! तेरे ही इस मुझ अपने पर, मेरे आचार्यदेव पर, गुरुदेव की आद्योपान्त वंशावली पर,मेरे मातृ-पितृ के वंशजों पर, सन्मार्ग द्योतक इस वंश के पूर्व पुरुषों पर, इस जगत के अन्य सन्तों पर, दया-दृष्टि की वृष्टि कर ! तू ही मेरे मालिक, एकमात्र दयावान है, एक मात्र आधार है !

हे अखण्ड ! हे करुणेश ! यह दीन स्तवन, तेरे ही नाम के संस्मरण से प्रारम्भ करने की तुझ से ही भिक्षा माँगता है, क्योंकि तू ही है जो इस जगत में दया करने वालों पर भी दया करने की क्षमता रखता है ! हर स्तवन केवल एक परमात्मदेव के लिए ही है, उस तुझ परमात्मा के लिए जो इस श्रष्टि को अपनी दृष्टि में रखता है, जो दय निधान है, जिसकी दया मात्र ही अखिल ब्रह्माण्ड को निज कृपा से मालामाल प्रति समय कर रही है, जो मेरे प्रति निर्णयार्थ,

पारितोष दण्ड एवं दया होने के दिन का मालिक है ! हे दयानिधि मैं तेरी ही स्तुति पूजा करता हूँ तथा तुझ एकमात्र से ही सहायता की याचना करता हूँ ! हे प्रभो ! प्राणिमात्र पर उन सन्मार्गों के पट खोल

दे, जिन मार्गों से सन्त वर्ग तेरी ओर चले एवं जिन पर तू ने कृपा की ! हे शुभेच्छु ! मुझे उस मार्ग से बचाना कि जिस पर चलकर प्राणी तेरे क्रोध का पात्र बना हो, मार्ग से भटक गया हो या जो अन्तिम धाम के सन्मार्ग को भूल गया हो ! मेरा ज्ञान, विश्वास इस जगत के आदि ऋषियों, समस्त अवतारों, श्रुतियों एवं आर्ष ग्रंथों पर, उनका अनुगमन करते हुए, धर्म परायण हो, नित बढे ! हे सतपुरुष ! तेरी विशेष दृष्टि सदा मुझ पर बनी रहे, क्योंकि तू ही एकमात्र अनुकरणीय है !

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सूफ़ी सन्तों के चक्रवेधी वंश के आचार्यों की

गुरु वंशावली

(शजरा शरीफ़ नक़्शबन्दी मुजद्दिदी मुज़हरी)

या इलाही अपनी अज़मत औ अता के वास्ते !

नूरे- ईमां दे मुहम्मद मुस्तफ़ा के वास्ते (1)

(अवतरित हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा साहब)

हे प्रभु ! अपने बड्डपन और देन के वास्ते और अपने प्यारे हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा के वास्ते मुझे ईमान की रोशनी (*सच्चा ज्ञान*) दे !

दिल मेरा हो नूरे- वहदत से मुनव्वर या वहीद !

हज़रते अबूबक्रे ज़ेबे ईतक़िया के वास्ते (2)

(ख़लीफ़ा अबूबक्र सिद्दीक़ी)

प्रभु ! संतवर अबूबक्र साहब सिद्दीक़ी, जो अत्यन्त नेक हैं, उनके वास्ते तू मुझ पर ऐसी कृपा कर कि मेरा हृदय ज्ञान के प्रकाश से देदीप्यमान हो जाये !

या इलाही नफ़्से-काफ़िर से मुझे इबलीस से !

ले बचा सुलेमान मुर्शिद बासिफ़ा के वास्ते ! (3)

*(*आचार्य सुलेमान फ़ारसी *)*

हे प्रभु ! पवित्रता की मूर्ति हज़रत सन्त सुलेमान साहब के वास्ते मुझे अहंकार और शैतान (माया) के छल फ़रेबों से बचा !

या इलाही इश्क़ से अपने मुझे कर सर बुलन्द !

हज़रते क़ासिम इमामे बेरिया के वास्ते ! (4)

(आचार्य इमाम क़ासिम बिन मौहम्मद)

हे प्रभु ! संतवर क़ासिम बिन मुहम्मद साहब के वास्ते मुझे अपने प्रेम से मालामाल कर !

या इलाही इश्क़ की आतिश से हो सीना कबाब !

ज़फ़िरे सादिक़ इमामे पेशवा के वास्ते ! (5)

(आचार्य इमाम जाफिर सादिक़)

हे प्रभु ! सन्मार्ग दर्शक संत जाफिर सादिक़ साहब के वास्ते तू प्रेम की ऐसी अग्नि मेरे भीतर प्रज्ज्वलित कर जिससे जलकर मेरा हृदय भस्म हो जावे अर्थात सिवाय तेरे प्रेम के और कोई इच्छा शेष न रहे !

या इलाही जुज़ तेरे भूलूँ मैं सब दुनियां औ दीं !

बायाज़ीदे पेशवा मर्दे ख़ुदा के वास्ते ! (6)

(आचार्य बायज़ीद बास्तामी)

हे प्रभु ! सत्य मूर्ति पथ प्रदर्शक संत बायज़ीद बास्तामी के वास्ते मैं सिवाय लोक और परलोक के सबको भूल जाऊँ !

या इलाही फ़ज़्ल से दे दौलते फुक्रो-फ़ना !

बुलहसन ख़्वाजा हमारे बासिफ़ा के वास्ते ! (7)

(आचार्य अबुल हसन ख़ाकीना)

हे प्रभु ! संत हज़रत अबुलहसन साहब के वास्ते अपनी दया से मुझे फ़क़ीरों की दौलत अर्थात अपना प्रेम और लय अवस्था प्रदान कीजिये !

या इलाही ता -अबद क़ायम रहे ये सिलसिला !

ख्वाजये बिलक़ासिमी नूरुलहुदा के वास्ते (8)

(आचार्य अबुलक़ासिम गुरगानी)

हे प्रभु ! संत अबुलक़सिम साहब के वास्ते हमारी यह वंश परम्परा प्रलय तक बनी रहे !

या इलाही जब मैं तेरा नाम लूँ तब हो हुज़ूर !

बूअली मक़बूल दरगाहे - ख़ुदा के वास्ते ! (9)

(आचार्य बूअली फ़रमादी)

हे प्रभु ! संत बूअली साहब जिनको परमात्मा ने अपना लिया है, उनके वास्ते जब मैं आपका नाम उच्चारण करूँ तब आपकी हुज़ूरी नसीब हो !

या इलाही कर हिजाबे-तन से मुझको पाक साफ़ !

ख़्वाजा यूसुफ़ क़ुत्बे आलम बाख़ुदा के वास्ते ! (10)

(आचार्य अबूयूसुफ़ हमदादी)

हे प्रभु ! परमसंत यूसुफ़ साहब जो संसार भर के क़ुतुब (संत शिरोमणि हुए, उनके वास्ते मेरे शारीरिक विकारों को दूर कीजिए

या इलाही इज़्ज़ते दुनियाँ औ दीं होवे अता !

इबदे -ख़ालिक़ इज़्देवानी बाहया के वास्ते ! (11)

(आचार्य अब्दुल ख़ालिक़ इज़दवानी)

हे प्रभु ! संत अब्दुल ख़ालिक़ इज़दवानी के वास्ते लोक और परलोक की इज़्ज़त प्रदान कीजिये !

या इलाही कर अता ईमां कि जिसके बाद कुफ्र !

हो न हज़रत ख़्वाजा आरिफ़ बासिफ़ा के वास्ते ! (12)

(आचार्य ख़्वाजा आरिफ़ रेवगिर)

हे प्रभु ! पवित्र आत्मा संत ख़वाजा आरिफ़ के वास्ते सच्चा ज्ञान दीजिये ताकि अज्ञान का नाश हो !

दूर कर जिस्मी अलालत और रूहानी मेरी !

ख़्वाजये महमूद मुर्शिदे बाज़िया के वास्ते ! (13)

(आचार्य महमूद अबुलखैर फ़गनवी)

हे प्रभु ! परम तेजस्वी संत ख़्वाजा महमूद अबुलखैर फ़गनवी के वास्ते मेरे मन और शरीर की बीमारियों को दूर कीजिये !

या इलाही दूर कर दुनियाँ औ दीं के दर्दो दुःख !

हज़रते ख़्वाजा अज़ीजां बादशा के वास्ते ! (14)

(आचार्य ख़्वाजा अली अज़ीज़)

हे प्रभु ! राजऋषि संत ख़्वाजा अज़ीज़ के वास्ते लोक और परलोक के दुःखों को दूर कीजिये !

या इलाही शरअ पर जब तक जिऊँ क़ायम रहूँ !

हज़रते ख़्वाजा मौहम्मद बाअता के वास्ते ! (15)

(आचार्य महमूद बाबा सय्यासी)

हे प्रभु ! ख़्वाजा मौहम्मद (जिनको परमात्मा ने बख्श दिया) के वास्ते ऐसी कृपा कर कि जब तक जीवित रहूँ धर्म शास्त्र पर दृढ रहूँ !

या इलाही हिफ़्ज़े ईमां वक्ते मुर्दन कीजियो !

हज़रते मीरे कुलाले पारसा के वास्ते ! (16)

(आचार्य सैयदुल सादात अमीर कलाल)

हे प्रभु ! पवित्र संत हज़रत मीर कलाल पारसा के वास्ते मरते समय तक

मेरे ईमान की रक्षा करना अर्थात मुझे ईमान पर क़ायम रखना !

या इलाही मुझसे ऐमाले शानिआ को छुड़ा !

शह बहाउद्दीन अकमल बासिफ़ा के वास्ते ! (17)

(आचार्य प्रवर चक्रबंधन मार्ग-दर्शक शह बहाउद्दीन)

हे प्रभु ! परम संत पवित्र आत्मा शह बहाउद्दीन साहब के वास्ते तू मुझसे बुरे कर्मों को छुड़ा !

या इलाही मुझ पै होवे नूरे-वहदत आशकार !

शह अलाउद्दीन मुर्शिद रहनुमा के वास्ते ! (18)

(आचार्य अलाउद्दीन अत्तार)

हे प्रभु ! पथ प्रदर्शक सन्त अलाउद्दीन के वास्ते मुझे अपने प्रेम का प्रकाश दीजिये !

या इलाही दे अमांमिन कुल्ले दाइन और बला !

हज़रते याकूब चर्खे पुर्जिया के वास्ते ! (19)

(आचार्य याकूब चर्खी)

हे प्रभु ! तेजस्वी सन्त याकूब चर्खी साहब के वास्ते मुझे हर तरह की मुसीबत और बालाओं से अपनी रक्षा में रखिये !

या इलाही पुल पै और महशर में हो पीरों का साथ !

ख्वाजये अहरार रासुल इतक़िया के वास्ते ! (20)

(संत अब्दुल्ला नासिरुद्दीन अहरार)

हे प्रभु ! दृढ विश्वासी संत ख़्वाजा अब्दुल्ला नासिरुद्दीन अहरार साहब के वास्ते मुझको पुल पर और क़यामत के दिन वंश के आचार्यों का साथ हो !

या इलाही जुहदो तक़वा और मुहब्बत अपनी दे !

हज़रते ख़्वाजा मौहम्मद पारसा के वास्ते ! (21)

(संत ख़्वाजा मौहम्मद ज़ाहिद)

हे प्रभु ! पवित्र आत्मा संत ख़्वाजा मौहम्मद ज़ाहिद साहब के वास्ते मुझको तप, पवित्रता और अपना प्रेम दीजिये !

=

या इलाही सारे इसियां और निसियां कर मुआफ़ !

शाह दरवेशे मौहम्मद मुर्तज़ा के वास्ते ! (22)

(आचार्य मुहम्मद मुर्तज़ा दरवेश)

हे प्रभु ! संत मुहम्मद दरवेश साहब के वास्ते मेरे पापों और भूलों को क्षमा कीजिये !

या इलाही दोस्त मेरे होवें हरदम शादमाँ !

ख़्वाजा उमकंकी मौहम्मद पारसा के वास्ते ! (23)

(आचार्य ख़्वाजा मुहम्मद उमकंकी)

हे प्रभु ! पवित्र आत्मा संत ख़्वाजा मौहम्मद उमकंकी साहब के वास्ते ऐसी कृपा कीजिये कि मेरे मित्र सदैव प्रसन्नचित्त रहें !

या इलाही तू हो बाक़ी और सबको जाऊँ भूल !

ख़्वाजा अब्दुल बाक़ी मुर्शिद रहनुमा के वास्ते ! (24)

(आचार्य ख़्वाजा अब्दुल बाक़ी **)**

हे प्रभु **!** पथ-प्रदर्शक संत ख़्वाजा अब्दुल बाक़ी साहब के वास्ते ऐसी कृपा कर कि तेरे सिवाय सबको भूल जाऊँ **!**

या इलाही या क़रीबो-क़ुर्ब कर अपना अता !

ग़ौसुल -आज़म शेख़ अहमद पेशवा के वास्ते ! (25)

(आचार्य दिगंत इमाम ख्वानी उल्फ़सानी शेख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी **)**

हे प्रभु **!** पथ-प्रदर्शक परम संत आचार्य दिगंत शेख़ अहमद साहब के वास्ते मुझे अपना समीपत्व प्रदान कीजिये **!**

या इलाही हुब्बे पीराने तरीक़त मुझ को दे !

हज़रते मासूम रासुल इतक़िया के वास्ते ! (26)

(आचार्य मुहम्मद मासूम)

हे प्रभु ! दृढ विश्वासी संत मासूम साहब के वास्ते मुझको अपने वंश के आचार्यों के प्रति प्रेम दीजिये !

या इलाही शिर्को-कुफ्रो-मासियत से दूर रख !

शेख़ सैफुद्दीन मुर्शिद रहनुमा के वास्ते ! (27)

(आचार्य सैफुद्दीन साहब)

हे प्रभु ! पथ-प्रदर्शक संत शेख़ सैफुद्दीन साहब के वास्ते मुझे दुई, नाफ़रमानी और अज्ञानता से दूर रखिये !

या इलाही ग़ैर का मोहताज मत कर मेरे रब !

सैयदे नूरे-मुहम्मद मुक़तदा के वास्ते ! (28)

(आचार्य नूर मुहम्मद बदायूंनी)

हे मेरे पालन पोषण करने वाले प्रभु ! संत नूर मुहम्मद शाह के वास्ते सिवाय मेरे गुरुदेव के मुझे दूसरे के आश्रित मत कीजिये !

या इलाही ग़ैब से रोज़ी दे ऐ रोज़ी-रसां !

शम्स दीं महबूब मुज़हर मीरज़ा के वास्ते ! (29)

(आचार्य शमशुद्दीन हबीबुल्लाह मिर्ज़ा जानजाना शहीद)

हे प्रभु परमात्मा के प्यारे संत शमशुद्दीन साहब के वास्ते मुझको ग़ैब से रोज़ी दीजिये !

या इलाही दे मुझे तौफ़ीक़े- ऐमाले-हसन

हज़रते ख़्वाजा नईमुल्लाह शाह के वास्ते ! (30)

(आचार्य नईमुल्लाह शाह बहराइची **)**

हे प्रभु **!** आचार्य नईमुल्लाह शाह के वास्ते मुझे शुभ कर्म करने की प्रेरणा दीजिये **!**

या इलाही अपनी रहमत से तू दे दिल की मुराद !

शह मुरादुल्लाह मक़बूले-ख़ुदा के वास्ते ! (31)

(आचार्य शाह मुरादुल्लाह साहब **)**

हे प्रभु **!** संत मुरादुल्लाह साहब के वास्ते अपनी दया से मेरे मन की इच्छा को पूरा कीजिये **!**

या इलाही शाद रख अपनी मुहब्बत में मुझे !

क़ुतबे-आलम बुलहसन नूरुलहुदा के वास्ते ! (32)

(आचार्य सैयद बुलहसन नसीराबादी)

हे प्रभु ! संत शिरोमणि बुलहसन साहब के वास्ते मुझे अपने प्रेम में डूबा रख !

या इलाही रहम कर मजरूह आसी पर सदा !

मौलवी अहमद अली खां रहनुमा के वास्त (33)

(आचार्य हाजी अहमद अली खां मऊ राशीदाबादी कायमगंजी)

हे प्रभु ! संत अहमद अली ख़ान साहब के वास्ते मुझ पापी पर सदैव दया कीजिये !

या इलाही तीरे -वहदत से मुझे मजरूह कर !

फ़ज़्ल अहमद खां फ़क़ीरे बेनवा के वास्ते ! (34)

(आचार्य प्रवर मुर्शिद मौलाना फ़ज़्ल अहमद खां साहब रायपुरी)

हे प्रभु ! सच्चे सीधे संत मौलवी फ़ज़्ल अहमद खां साहब के वास्ते मेरे हृदय को अपने प्रेम वाण से ऐसा घायल कर दीजिये कि उसमें दुई बिल्कुल न रहे !

या इलाही फ़ज़्ल से दे मुझको फ़ज़्ले अहमदी !

'राम' फ़ज़्ली और 'रघुबर ' बाअता के वास्ते ! (35)

(परमसन्त महात्मा रामचंद्र जी फतेहगढ़ी एवं तस्य अनुज श्री रघुबर दयाल जी, कानपुरी)

हे प्रभु ! संत सतगुरु रामचंद्र जी महाराज एवं उनके भाई संत रघुबरदयाल जी के वास्ते मुझे अपनी फ़ज़्ल और दया प्रदान कीजिये !

पीर से उल्फ़त हो मुझको और बनूँ उनकी मुराद !

'राम' के 'श्रीकृष्ण ' की अनुपम दया के वास्ते ! (36)

(परमसन्त डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी सिकन्दराबादी)

हे प्रभु ! आचार्य संत प्रवर डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी साहब के वास्ते मुझ पर ऐसी कृपा कर कि मुझे गुरुचरणों में प्रेम हो और मैं उनकी मुराद बनूँ !

हे प्रभु ! निज प्रेम देकर सबके दुःख हर लीजिये !

'श्रीकृष्ण' के 'करतार' की अविरल कृपा के वास्ते ! (37)

(परमसन्त डॉ. करतार सिंह जी साहब)

हे प्रभु ! सन्त प्रवर डॉ.श्रीकृष्ण लाल जी साहब के प्यारे भक्त सन्त डॉ . करतार सिंह जी के वास्ते अपना प्रेम देकर सारे संसार के दुःख हर लीजिये और अपनी सतत कृपा कीजिये !

प्रेम हो श्रीकृष्ण का और नूर हो करतार का !

सत्कार श्री गुरु का करें 'शक्ति' कृपा के वास्ते ! (38)

(परमसंत डॉ. शक्ति कुमार जी साहब)

हे प्रभु ! परम सन्त डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज के शिष्य और सन्त प्रवर डॉ. करतार सिंह जी साहब के मुराद डॉ. शक्ति कुमार जी की कृपा के वास्ते हमको ख़ुदा के प्रेम और नूर से सराबोर कर दीजिये !

चौमुखा जाप

(दाएं कंधे कि तरफ)
या फ़त्ताहो
(सफलता देने वाला)
(1)

(सिर के ऊपर की तरफ़)
या वाहाबो
(पालन पोषण करने वाला)
(3)

(दिल पर)
या अल्लाहो
(केवल परमात्मा हीं)
(4)

(बाएँ कंधे कि तरफ)
या रज्ज़ाको
(रोज़ी देने वाला)
(2)

॥ फ़क़ीर श्रीकृष्ण, सिकंदाराबादी ॥

दारुल शरीफ़

अल्लाहुम्मा स्वल्ले अला सैयदना मौहम्मदिन मादनिल-जूदे-वलकरम व आलही व सल्लम !

अर्थ

हे प्रभु ! हमारे सरदार हज़रत मौहम्मद पर जो की बख्शीश और मेहरबानियों की खान है, अपनी कृपा की बृष्टि कर और उनकी संतान पर भी अपनी रहमत (कृपा) की बृष्टि कर तथा उन्हें दीर्घायु बना ! हमेशा ख़ुश रहें !

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ - गुरु कहता है - "हे शिष्य ! ॐ कहकर भू मंडल, भुवर मंडल और स्वः मंडल - तीनों मंडलों का विचार छोड़कर, उस मनोरंजन सविता (सुहावने सूरज) को देखो ! उस (प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप) परमात्मा को अपनी अन्तर-आत्मा में धारण करो, जिससे वह सूर्य (परमात्मा) बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे !

मंगलाचरण

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर॥

बन्दउँ गुरु पद पदुम परागा, सुरुचि सुवास सरस अनुरागा !
अमिअ मूरिमय चूरण चारु, समन सकल भव रुज परिवारु !!
सुकृति संभु तन विमल विभूती, मंजुल मंगल मोद प्रसूति !
जनमन मंजु मुकुर मल हरनी, किये तिलक गुनगन बस करनी !!
श्री गुरुपद-नख मनिगन ज्योती, सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती !
दलन मोह तम सो सप्रकासू, बड़े भाग्य उर आवहि जासू !!
उघरहि विमल बिलोचन हिय के, मिटहिं दोष दुःख भव रजनी के !
सूझहिं राम चरित मनि मानिक, गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक !!

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा !
गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः !!
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च द्रविणम त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम देव देवः।।

ईश्वर स्तुति

हे जगनायक ! विश्व विनायक ! हे जगजीवन के जन हे ।
हे दुःख भंजन ! जन मन रंजन ! जय-जय आनंद के घन हे ।।
गुरु पितु माता, सब जग त्राता, मनुज रूप नर नागर हे ।
हे निर्गुण हे निराकार प्रभु ! निर्भय निगम निरंजन हे ।।
व्यक्त तुम्हीं अव्यक्त तुम्हीं हो, सत् चित आनंद रूप विभो ।
गुणागार गोतीत अगोचर अनुभवगम्य अजेय प्रभो ।।
सब के स्वामी अंतर्यामी पारब्रह्म परमेश्वर हे ।
करुणासागर सब गुण आगर सत् चित प्रेम निकेतन हे ।।
हे जग त्राता विश्व विधाता, हे सुख शांति निकेतन हे !
प्रेम के सिन्धु, दीन के बन्धु, दुःख दारिद्र विनाशन हे !!
नित्य अखंड अनंन्त अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे ।
जग आश्रय जग-पति जग-वन्दन, अनुपम अलख निरंजन हे !!
प्राण सखा त्रिभुवन प्रति-पालक, जीवन के अवलंबन हे

राम धुन

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम !
जय रघुनन्दन जय घनश्याम , जानकीवल्लभ जय सियाराम !!
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान !
भक्तन के रखवाले राम, सन्तन प्राण प्यारे राम !!
अवध बिहारी सीताराम, कुँज बिहारी राधेश्याम !
घट-घट वासी सीताराम, अन्तर्यामी राधेश्याम !!
अलख निरंजन सीताराम, भव-भय भंजन राधेश्याम !
तन में राम, मन में राम, रोम-रोम में राम ही राम !!
हृदय हमारे आओ राम, अब तो दरस दिखाओ राम !
रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम !!

गुरु वन्दना (प्रातःकाल)

हे दीनबन्धु दयालु गुरु, केहि भांति तब गुण गाऊँ मैं !

तुम्हरे पवित्र चरित्र, केहि विधि नाथ कह के सुनाऊँ मैं !!

जिव्हा अपावन है मेरी, गुरु नाम कैसे लीजिये !

मन फँस रहा भाव-जाल में वह किस तरह प्रभु दीजिये !!

धन धान्य माया रूप हैं, क्योंकर निछावर कीजिये !

संसार सागर में फँसा, गुरु-ध्यान कैसे कीजिये !!

तन कैसे अर्पण कर सकूँ, यह तो महा पापी अधम !

धन-धान्य और मन दे के गुरु, तुम से नहीं उद्धार हम !!

श्रद्धा सुमिरनी भेंट कर, मैं दीन हो चरणों पड़ा !

मैं पतित, तुम पतित पावन, आपका है आसरा !!

भव-सिन्धु में हूँ फँस रहा, गुरुदेव मुझे उबारिये !

गहि बाँह दीनानाथ, अपराधी को पार लगाइये !!

जो दीन हो चरणों पड़े, हे नाथ ! वे सारे तरे !

तेरा भिखारी तुझ बिना, प्रभु आसरा किसका करे !!

मैं दीन हूँ, तुम दीन बन्धु, मैं अधम तुम नाथ हो !

मैं हूँ अनाथ कृपा-निधान, तो तुम अनाथों के नाथ हो !!

माता-[पिता, सुत-भ्रात-भार्या, कोई साथ न जायेंगे !

उस पाक-कुंभी नर्क में, कोई न हाथ बटायेंगे !!

यह सोच के तब शरण आया, तब ठिकाना है नहीं !

बस पार कर दो मेरी नौका, और अपना है नहीं !!

सलाम

अस्सलाम अय हादिये इश्क़े जलीं,

अस्सलाम अय मुर्शिदे बज़्मे ख़फ़ी !

अस्सलाम अय पासवाने बेख़ुदी,

अस्सलाम अय नाज़िने ख़ुद आगही !

अस्सलाम अय सतगुरु की आत्मा,

अस्सलाम अय चश्मे दिल के देवता ! (1)

========== **1.** हादिये -पथ प्रदर्शक **2.** जली-प्रेम से परिपूर्ण **3.** मुर्शिद-सतगुरु **4.** बज़्मे -दिल की महफ़िल **5.** ख़फ़ी -देखने वाला. छिपा हुआ **6.** पासबाने-निगहबान **7.** बेख़ुदी -मस्ती **8.** नाज़िने-बहुत ही खूबसूरत **9.** ख़ुद आगही -स्वयं प्रकाशित

==========

आपकी शाने वजूदे बासऊद,

फ़ुक़्र की ज़ामिन थी बावस्फे सऊद !

तिशनये मफ़हूमे रम्ज़ हस्ते वजूद,

भेजते हैं आज सब मिलकर दरूद !

अस्सलाम अय पीरे कामिल सतगुरु,

अस्सलाम अय संत मत की आबरू ! (2)

==========

10. बासऊद- नेक 11. फ़ुक़्र -फ़कीरी (12) बावस्फ़े-तारीफ़ के साथ 13. सऊद-नेक
14. तिशनये -प्यासा 15. महफ़ूमे-समझ 16. रम्ज़ -भेद 17. हस्ते -हस्ती

18. वजूद -जात या अस्तित्व , 19.दरूद -श्रद्धा की भें

==========

जाते-अक़दस थी बफ़ैज़ाने - हसीं,

ख़ुद बख़ुद चरणों पै झुकती थी जबीं !

कर दिए इस्रारेहक पल में नगीं,

जिस पै डाली इक नज़र होकर करीं !

अस्सलाम अय पाकबातिन ऐन-नूर,

अस्सलाम अय मखज़ने जाने सरूर !

जाते-अक़दस -नेक जात बफ़ैज़ाने-शक्ति प्रसार हसीं - ख़ूबसूरत ज़बीं -माया इस्रारेहक़ - जिज्ञासा नगीं-जाग्रत या प्रकाशित करीं-दयालु पाकबातिन -अन्दर से शुद्ध ऐन नूर -ख़ुद रौशनी,

मखज़ने-खज़ाना सरूर-आनन्द

नक़्श दिल पर आपके इर्शाद हैं,

मंत्र अब भी सेवकों को याद हैं !

तिशनायेदिल बाचश्मेनम बरबाद हैं,

आपही से तालिबे इमदाद हैं !

अस्सलाम अय आशिक़े रस्मोहिजाब,

अस्सलाम अय ख़ुद सवालो ख़ुद जबाब ! (4)

किस तरह अब आपके दर्शन करें,

हम यहाँ हैं आप हैं सतलोक में !

आसरा अब ज़िन्दगी में किसका लें,

आप मालिक हैं तवज्जो दें, न दें !

अस्सलाम अय रूह साज़े-ज़िन्दगी,

अस्सलाम अय नूह नाज़े-बन्दगी ! **(5)**

-

साज़े-ज़िंदगी - ज़िंदगी के तार नूह-नाज़े -बन्दगी - पूजा का तप ग़मे-फुरक़त - जुदाई का दुःख

रमतलब -रास्ते की शाने आली - महान नवाज़े - देने वाला रोज़े दस्त - रात दिन

दिल ग़मे-फ़ुरक़त से घबराता है जब,

यह दुआ करती है शरमें-रमतलब !

शाने-आली और करम से क्या अजब,

ज़िक्रो-दर्शन से नवाज़े रोज़ -सब !

दास तो मझदार में है बासलाम,

बोलता है आपकी जय अस्सलाम ! **(6)**

गुरु-वन्दना (सांयकाल)

हे दीनबन्धु दयाल गुरु, स्वीकार कोटि प्रणाम हों !
महिमा तुम्हारी है अगम, अतिशय पवित्र महान हो !!

माया के दलदल में फँसा हूँ, बस नहीं चलता ज़रा !'
सब हौंसले हारा हुआ हूँ, आपका है आसरा !!

हैं आपके पद-कंज निर्मल, हरण भव संताप हैं !
फिर भी प्रभो ! होकर तुम्हारा शेष मेरे पाप हैं !!

हूँ दीन-हीन दुखी अकिंचन, लेश अधिकारी नहीं !
फिर भी पतित को त्राण देना, तुमको कुछ भारी नहीं !!

मन एक और अनेक बंधन में बंधा है रो रहा !
कोमल हृदय समरथ्थ सन्मुख आपके सब हो रहा !!

अति दुखित हूँ, अति विकल हूँ, मन जल रहा त्रय ताप से !

प्रभु ! शान्ति जल बरसाइये, आशा लगी है आपसे !!

मेरे महादानी पिता ! मुझ पर अनुग्रह कीजिये !

मन मधुप हो पद-पदम् पर, वरदान ऐसा दीजिये !!

नहीं नर्क से भय कुछ मुझे, न ही स्वर्ग की है कामना !

जहाँ भी रहूँ क्षण भर न भूलूँ, दीन की है याचना !!

संतोष अब होता नहीं, हे देव ! करुणा कीजिये !

निज से विलग मत कीजिये, मन प्रेम से भर दीजिये !

मैं हूँ शरण-शरणागते, हे दीनबन्धु दयानिधे !

भव-ताप-हरण नमामिते, हे पूज्यतम करुणानिधे !!

दुआ

जामे-राहत से सभी सरशार हों,

सब के सब नावाक़िफ़े-आज़ार हों !

सब को हासिल हों फ़रागे-ज़िन्दगी,

सबका रौशन हो चिराग़े-बन्दगी !

सब की ख़ैरो-आफ़ियत की है दुआ,

अहले-आलम में हो इक -इक का भला !

मुन्तिलाये दर्दो-ग़म कोई न हो,

तेरा महरूमे- करम कोई न हो !

जामे राहत-चैन का अमृत सरशार-भींगना नावाक़िफ़े-आज़ार - दुखों से अनजान फ़रागे-ज़िन्दगी-जीवन से मुक्ति ,रौशन-दैदीप्यमान चिराग़े बन्दगी -आराधना की ज्योति खैरोआफ़ियत-कुशल मंगल अहले आलम -श्रष्टि के जीव मात्र मुन्तिलाये -फंसना दर्दो-ग़म - वेदना,दुःख महरूमे करम - कृपा से वंचित रहना

शान्ति पाठ

ॐ ! द्यौ : शांतिः ! अन्तरिक्षग्वं शान्तिः !

पृथ्वीः शांतिः ! आपः शांतिः !

औषधियः शांतिः ! वनस्पतयः शांतिः !

विश्वेदेवा शांतिः ! ब्रह्म शांतिः !

सर्वग्व शांतिः ! शन्तिर एव शांतिः !

सा मा शन्तिर एधि !!

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

(यजुर्वेद : ०/३६/१७)

भावार्थ - हे परमेश्वर ! आपकी कृपा से सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्रों के प्रकाश से प्रकाशमान आदित्यलोक शान्ति प्रदाता हो ! भूलोक और पृथ्वी के मध्य स्थित आकाश शांतिकारक हो ! पृथ्वीलोक, भूमि और भूमि से उत्पन्न होने वाले पदार्थ शान्ति प्रदान करने वाले हों ! नदी, समुन्द्र और कूप के जल शान्तिदायी हों ! अन्न और सोमलता आदि औषधियाँ शान्तिदायनी हों ! वट, गूलर आदि वनस्पतियाँ शांतिकारक हों ! सूर्य, चंद्र आदि सब दिव्य शक्तियाँ, सब विद्वान लोग, सब शान्ति देने वाले हों ! वेद, ज्ञान, परमेश्वर, शान्तिदायी हों ! सब दिव्य शक्तियाँ एवं पदार्थ शान्ति प्रदाता हों ! स्वयं शान्ति भी शान्ति देने वाली हो ! सबको आह्लाद प्रदान करने वाली वह शान्ति मुझे प्राप्त हों ! हे देव ! मुझे वह शान्ति प्रदान करो की मैं संघर्षों से जूझता हुआ भी सदा शान्त रहूँ !

नियम

(पूज्य लालाजी महाराज द्वारा बताये गये)

1) प्रत्येक सत्संगी प्रातः सूर्य निकलने से पहले उठे !

2) प्रत्येक सत्संगी नौकर सहित (यदि हो तो) घर की सफाई करने में लग जावे, को झाड़ू दे, कोई खाट उठाकर बिछौनों को क्रम से तह करके एक ओर रखे ! कोई अंगोछा लेकर चीज़ों को झाड़ दे !

3) सब लोग शौचादि से निवृत होकर, अगर स्नान करने की आवश्यकता हो तो स्नान करें, वरना हाथ, मुँह धोयें ! अगर समय न हो तो नहाने की ज़रूरत नहीं है, ताकि पूजा का समय न निकल जाये !

4) एक स्थान या एक कमरा पूजा के लिए निश्चित करना चाहिए ! इसमें सुगन्धित धुप आदि सुलगानी चाहिए !

5) साफ़ कपडे बदल लें जिन्हें पूजा के लिए अलहदा रखना चाहिए !

6) पूजा प्रार्थना से प्रारम्भ की जावे ! एक मनुष्य भजन गावे, शेष सब सुनें ! इसके उपरान्त परमात्मा के ध्यान में लवलीन रहें ! अन्त में फिर प्रार्थना की जाय ! यह सब कार्य प्रातः 7 बजे तक पूर्ण हो जाना चाहिए !

7) अगर समय हो तो तीसरे प्रहर धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करें !

8) शाम को सुबह की भाँति भजन और आन्तरिक अभ्यास करें

9) रात्रि को दस बजे सो जाना चाहिए ! सोने से पहले बिस्तर पर बैठकर या लेटकर ध्यान करना चाहिए और उसी ध्यान में सो जाना चाहिए !

10) अविश्वासी को सत्संग में न बुलायें ! उनके संग से बचें !

11) सत्संगियों का कर्तव्य है कि झूंठ से परहेज़ करें, जहाँ तक सम्भव हो हक़-हलाल (शुद्ध -ईमानदारी) की कमाई पर निर्वाह करें ! परायी स्त्रियों और छोटे बच्चों की सोहबत से परहेज़ करें ! जुआ किसी भी प्रकार का न खेलें ! सिनेमा वगैरह से जहाँ तक सम्भव हो सके परहेज़ करें !

12) हर प्रकार के नशे से बचें ! माँस का इस्तेमाल न करें और किसी पार्टी के मेम्बर न बनें ! किसी का दिल न दुखायें ! हर मत के अवतारों, पैग़म्बरों और महापुरुषों की समान रूप से इज़्ज़त करें ! हर धर्म की किताबों को आदर की दृष्टि से देखें !

13) प्रत्येक सत्संगी अपनी आमदनी में से 3 पैसे बचायें ! इसमें से आधा अपने मुस्तकीन (जिनका हक़ हो) रिश्तेदारों अज़ीज़ों (छोटे, प्रियजन) विधवाओं

अनाथों, वगैहरा की मदद पर खर्च करें ! सत्संग में आने-जाने के लिए अपने पास रुपया रखें ताकि वक़्त पर परेशानी न हो और बाकी रुपया सत्संग को भेंट कर दें !

14) जिस हालत में परमात्मा ने रखा है, उसमें खुश रहें ! अपनी दुनियावी तरक़्क़ी के लिए परमात्मा की मौज का सहारा लेकर ज़रूर कोशिश करें, लेकिन अगर कामयावी (सफलता) न हो तो उसको मौज़ समझकर परेशान न हों !

15) रिश्तेदारों की मौत पर ज़ोर-ज़ोर से रोना, दावतें (भोज) वगैरह करना ठीक नहीं है ! अगर हो सके तो गरीबों को खाना खिलायें ओर मरने वाले की आत्मा के लिए दुआ करें !

गुरुजनों को नमन

मेरे तो आधार हैं गुरुदेव के चरणारविंद !

मेरे तो आधार हैं श्री राम के चरणारविंद ! !

मेरे तो आधार हैं श्री कृष्णा के चरणारविंद !

मेरे तो आधार हैं श्री करतार के चरणारविंद !

* * * * * *

सर्व शक्तिमते परमात्मने गुरुदेवाय नमः

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्रीकृष्णाय नमः सर्व शक्तिमते परमात्मने करताराय नम *(*उपरोक्त चार पंक्तियाँ सभी भाई-बहिन सत्संग के बाद प्रसाद वितरण के समय, मिलकर गावें, जैसा कि भंडारों में होता है *)*

प्रसादार्पण एवं दुआ

आइये अति प्रेम से, यह प्रेम का उपहार है!
प्रार्थना स्वीकार हो, यह प्रेम का सत्कार है!
आइये अति प्रेम से, यह प्रेम का उपहार है!
प्रेम बढे और दुई मिटे, यह प्रेम का विस्तार है!

सदा से सनेही रहे आपके हैं! कृपा पात्र जाते कहे आपके हैं!
आशा है हमको निराशा न होगी! आशा है दृढभंग आशा न होगी!

दुआ

जामे राहत से सभी सरशार हों, सबके सब नावाक़िफ़े आज़ार हों !
सबको हासिल हो फ़राग़े ज़िन्दगी, सबका रोशन हो चिरागे-ज़िन्दगी !

सबकी खेरौ-आफ़ियत की है दुआ,
अहले-आलम में हो हर एक का भला !

मुब्तिलाये दरदो-ग़म कोई न हो, तेरा महरूमे करम कोई न हो !

अर्थ :- शांति, सुख-चैन का प्याला सभी जी भर के पियें, कष्ट से दूर रहकर जियें ! सभी का जीवन खिले, महके, सदा फूले-फले और जीवन-दीप में ब्रह्मज्योति की लौ नित जले ! हों कुशल मंगल सभी के घर - यही है प्रार्थना, विश्व के कल्याण की बढ़ती रहे शुभ कामना ! कहीं भी, कोई भी, दुःख-सुख से पीड़ित न हो, आपकी अनुपम दया से कोई भी वंचित न हो !

सबका भला करो

सबका भला करो भगवान
सब पर दया करो भगवान
सबके पाप हरो भगवान
सबके कष्ट हरो भगवान
सबको सन्मति दो भगवान
सबको क्षमा करो भगवान
सब में आप रमो भगवान

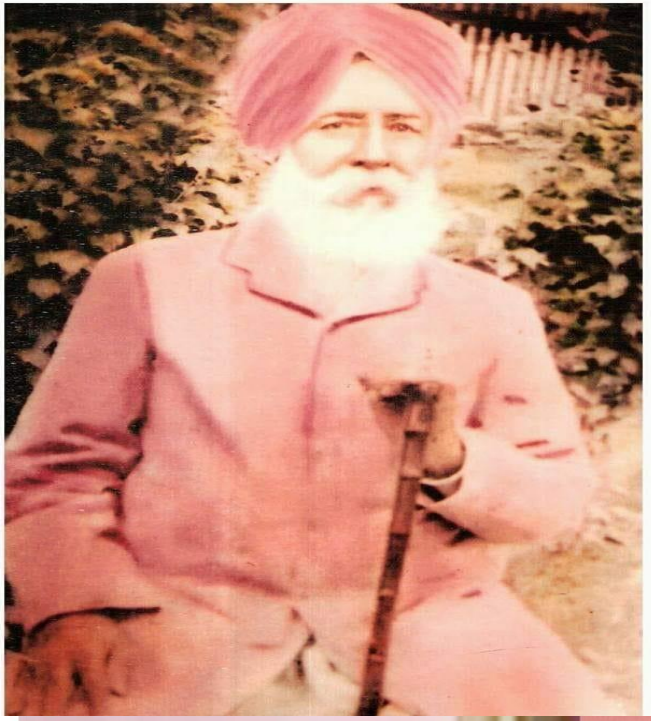

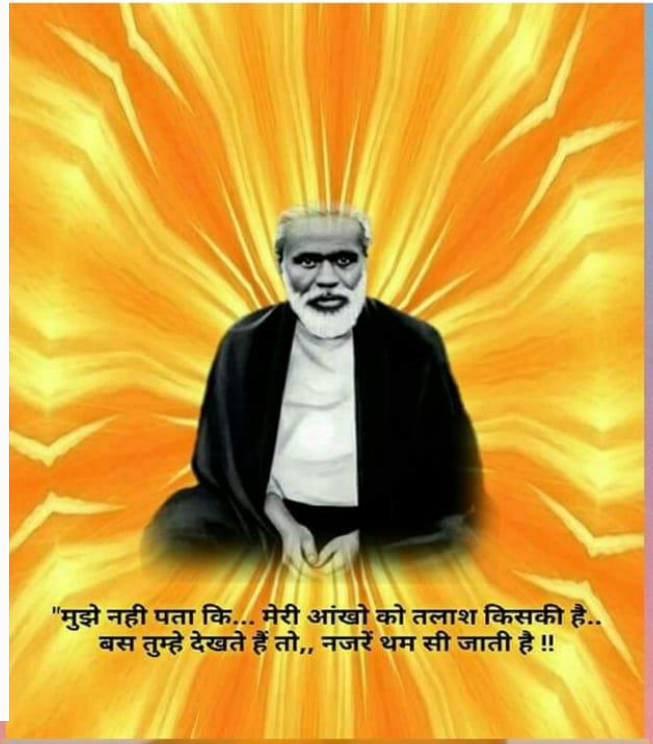
"मुझे नही पता कि... मेरी आंखो को तलाश किसकी है..
बस तुम्हे देखते हैं तो,, नजरें थम सी जाती है !!
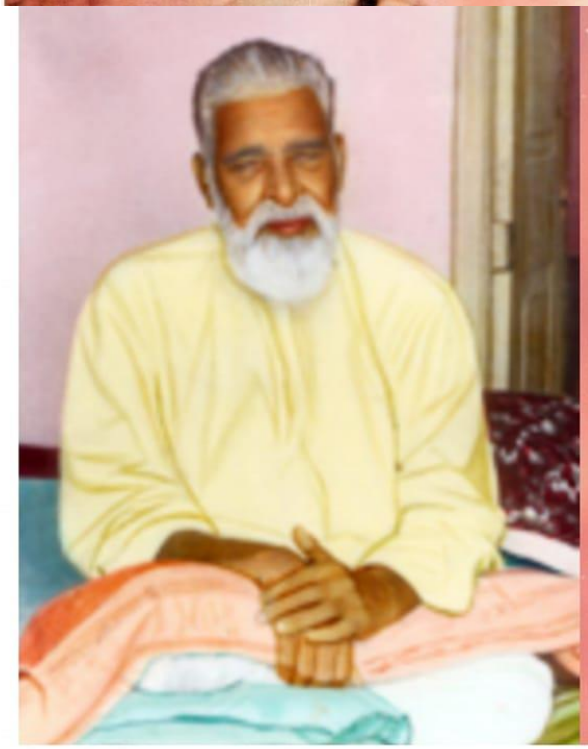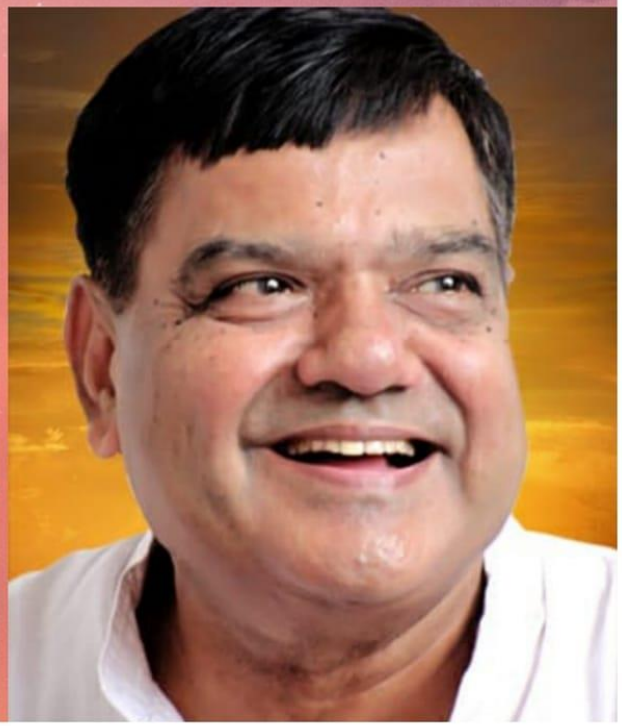
ॐ